HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-I, (Effect of Industrial Revolution)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 66

"औद्योगिक क्रांति का प्रभाव"

(Effect of Industrial Revolution)

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

औद्योगिक क्रांति के परिणाम बहुत महत्वपूर्ण थे। क्रांति के फलस्वरूप केवल इंग्लैंड का ही नहीं, बल्कि सारे संसार का स्वरूप बदल गया। यंत्रों के सहारे काम प्रारंभ होने से गृह-उद्योगों का अंत हो गया। घरेलू उद्योग में काम करनेवाले मजदूरों की जीविका मारी गई। बड़े पैमाने पर उत्पादन प्रारंभ हुआ। कारखानों को चलाने के लिए कच्चा माल प्राप्त करने तथा तैयार माल की बिक्री के लिए नए नए बाजारों को ढूंढ निकाला गया। व्यापार का स्वरूप विश्वव्यापी हो गया और वस्तुओं के

मूल्य में स्थिरता आ गई। बड़े-बड़े कारखानों की स्थापना के कारण समाज में दो वर्गों का प्रादुर्भाव हआ। पूजीपति और मजदूर। एक ओर अपार धनराशि थी और दूसरी ओर निर्धनता। इसलिए, भविष्य में दोनों वर्गों के बीच संघर्ष अवश्यंभावी हो गया। मजदूरों का पारिवारिक जीवन नष्ट हो गया। उनके भोजन, आवाय स्वास्थ्य का समुचित प्रबंध नहीं था। गंदे वातावरण में रहने के कारण बच्चों की मृत्यु अधिक होती थी।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप इंग्लैंड एक व्यावसायिक देश हो गया। समस्त संसार इगलैंड का बाजार बन गया। भारतवर्ष अँगरेजी माल की खपत के लिए एक अच्छा बाजार बन गया था। व्यापार एवं व्यवसाय में प्रगति के फलस्वरूप राष्ट्रीय संपत्ति में वृद्धि हुई। राष्ट्रीय संपत्ति में वृद्धि के कारण ही अमेरिका में होनेवाली क्षति एवं नेपोलियन-युग के युद्ध का सामना करने में इंगलैंड सफल हो सका। बड़े पैमाने पर उत्पादन के कारण इंगलैंड संसार का सर्वश्रेष्ठ व्यवसायी देश बन गया। समाज में पूँजीपतियों की धाक बढ़ गई और मध्यकालीन व्यापारवाद (mercantilism) का अंत हो गया।

इस प्रकार औद्योगिक क्रांति के प्रभाव निम्नलिखित है....

 # मजदूरों का संगठन एवं सुधार-

कारखाना-प्रणाली का विकास मजदूरों के लिए घातक सिद्ध हुआ। इस प्रणाली के विकास के कारण बहुत-से मजदूर बेकार हो गए। मजदूरों का

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

संबंध घर से छूट गया। वे मजदूरी पर ही निर्भर रहने लगे। कम मजदूरी देकर मालिक उनसे अधिक काम लेते थे। बाल-मजदूरों की दशा अत्यंत दयनीय थी। दयनीय दशा से छुटकारा पाने के लिए मजदूरों ने पूँजीपतियों के विरुद्ध आंदोलन प्रारंभ किया। सरकार को विवश होकर मालिकों एवं मजदूरों के झगड़े मिटाने के लिए कारखाना-कानून पास करना पड़ा। असंतुष्ट मजदूरों का राजनीतिक संगठन कायम हुआ, जिसे चार्टिस्ट आंदोलन कहते हैं। श्रमिक संघ की भी स्थापना की गई। चार्टिस्ट आंदोलन एवं श्रमिक-संघ-आंदोलन के द्वारा मजदूरों की दशा में सुधार लाने के लिए उन्नीसवीं सदी में कई कानून पास हुए। उन कानूनों में वर्कशाप नियंत्रण कानून (Workshop Regulation Act) विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसके द्वारा काम के घंटे नियमित किए गए। मजदूरों की भलाई के लिए कई अन्य कानून भी पास हुए।

#. पूँजीवाद का विकास-

औद्योगिक क्रांति का महत्त्वपूर्ण परिणाम था पूँजीवाद का विकास। पूँजीपति- वर्ग आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में सरकारी हस्तक्षेप की नीति पसंद नहीं करता था। वह स्वतंत्र व्यापार का पक्षपाती था. जिसका प्रचार एडम स्मिथ ने किया। मध्यकालीन व्यापारवाद का अंत हो जाने से पूँजीपति-वर्ग कारखानों का निरंकश मालिक बन बैठा। स्वतंत्र व्यापार की नीति को राजकीय संरक्षण मिला एवं उपनिवेशों का मूल्य घट गया।

Dr Gundu Kumari (A.N.D College)

पूंजीपति-वर्ग उपनिवेशों को पके फल के समान महत्त्व देता था, जो शीघ्र ही पेड़ से टपक जानेवाला था।

#. पूॅंजीवादी व्यवस्था में धन के समस्त साधन-मानव-श्रम, यंत्र, कच्चा माल आदि का एकमात्र अधिकारी पूंजीपति-वर्ग हो गया, अतः पूंजीवाद औद्योगिक क्रांति का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम था। पूँजीवादी व्यवस्था में धन का स्रोत पूंजीपतियों के हाथ में था।

पूॅंजीवादी व्यवस्था में प्रत्येक वस्तु का मूल्य धन के रूप में आंका जाने लगा। पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन का मूल्य लाभ होता है। उत्पादन का उद्देश्य सामाजिक कल्याण नहीं रहता। उत्पादन में लाभांश होने पर उद्योगपति कल-कारखानों को बंद कर देते हैं और व्यक्ति गरीबी एवं बेकारी का शिकार हो जाता है। संपत्ति का विभाजन विषम रूप में हो जाता है। देश की संपत्ति कुछ व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित हो जाती है। फलस्वरूप, समाज के धनी और गरीब के बीच महान अंतर हो जाता है। मनुष्य का शोषण प्रारंभ हो जाता है और गरीबी के कारण उनका नैतिक स्तर गिरता है। खून-खराबी का दौर चल पड़ता है। सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए पूँजीपति शश्त्रों की वृद्धि करते हैं। राष्ट्र-राष्ट्र के बीच द्वेष बढ़ता है और संसार में अशांति उत्पन्न हो जाती है। अशांति के कारण साम्राज्यवाद का विकास होता है और अंतरराष्ट्रीय तनाव बढ़ता है।

Dr Gundy Kumari (A.N.D College)

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि पूँजीवाद और समाजवाद औद्योगिक क्रांति की ही देन हैं। पूँजीवाद की शोषण-नीति के विरोध में समाजवाद का विकास हुआ। प्रारंभ में कुछ उदारवादी पूँजीपतियों ने समाजवाद की व्याख्या अपने ढंग से की। सर रॉबर्ट ओवेन स्वयं मिल-मालिक था। वह पहला व्यक्ति था, जिसने समाजवादी विचारधारा का समर्थन किया। ओवेन ने कारखाने से प्राप्त लाभांश का उचित बंटवारा मजदूरों के साथ कर स्वयं आदर्श उपस्थित किया। वह पहला व्यक्ति था, जिसने समाजवाद शब्द का प्रयोग व्यावहारिक रूप में किया। आगे चलकर कार्ल मार्क्स ने वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांत की व्याख्या की। 'साम्यवादी घोषणापत्र' एवं 'पूँजी' नामक पुस्तक के माध्यम से कॉर्ल मार्क्स ने संसार के मजदूरों को संगठित होने का संदेश दिया। वर्ग-संघर्ष को ऐतिहासिक तथ्य मानकर पूँजीपतियों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए उसने मजदूरों को प्रेरित किया। उसका विचार था कि संघर्ष द्वारा ही सर्वहारा वर्ग का प्रभुत्व स्थापित हो सकता है और वर्गहीन समाज की स्थापना हो सकती है।

 # बौद्धिक विकास-

औद्योगिक क्रांति का प्रभाव विश्वव्यापी था। आधुनिक युग की सारी सुख सुविधाओं का आधार औद्योगिक क्रांति ही है। इसके फलस्वरूप, नई राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याएँ उपस्थित हुई और उन्हें हल करने की ओर जब मानव अग्रसर हुआ, तब उसमें नई राजनीतिक एवं

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

सामाजिक चेतना आई। पूँजीपतियों के द्वारा शोध कार्य प्रारंभ किया गया अनुसंधान-परिषद् की स्थापना की गई स्कूल एवं कॉलेज खोले गए और ज्ञान की वृद्धि हुई। प्रारंभ में शोधकार्य पूँजीपतियों ने अपने स्वार्थ के लिए करवाया, किंतु उसके परिणाम से संपूर्ण मानव समाज को लाभ हुआ। यंत्रों द्वारा काम करने से मनुष्य को आराम मिला और ज्ञानोपार्जन की प्रवृत्ति उसमें जगी।

 # सामूहिक भावना का विकास एवं जनसंख्या में वृद्धि-

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि हुई। 60 वर्ष के अंदर इंगलैंड और वेल्स की जनसंख्या दुगनी हो गई। आबादी में वृद्धि के फलस्वरूप नए-नए शहरों का विकास हुआ। गाँव वीरान बन गए और शहरों की आबादी बढ़ गई। व्यापारिक केंद्रों में जनसंख्या अधिक हो गई। व्यापारिक केंद्र बड़े-बड़े नगर बन गए।

 # पूँजीपतियों को राजनीतिक अधिकार की प्राप्ति-

आबादी में वृद्धि एवं स्थान-परिवर्तन के कारण पुराने जमींदारों और पैसों का प्रभाव घट गया । राजनीतिक अधिकार पूँजीपतियों के हाथों में आ गए। पुराना पारिवारिक संबंध खत्म हो गया। पूँजीपतियों का प्रभुत्व पार्लियामेंट में बढ़ गया और वे सुधार की माँग करने लगे।

#. पार्लियामेंट में सुधार की माँग-

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

जनसंख्या में हेरफेर एवं नए शहरों की स्थापना ने नई समस्या उत्पन्न कर दी। पुराने चुनाव-क्षेत्रों में परिवर्तन लाना आवश्यक हो गया। नए शहरों को प्रतिनिधित्व दिलाने की माँग जोर पकड़ने लगी। सुधार की माँग ने राजनीतिक आंदोलन को जन्म दिया और परिस्थिति से विवश हो विधान में सुधार लाना आवश्यक हो गया।

#. मजदूरों का एक शक्तिशाली वर्ग बन गया-

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप सामाजिक मान्यताएँ बदल गई। मजदूर एक शक्तिशाली वर्ग बन गया। उनके हितों की उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। मजदूरों की भलाई के लिए अनेकानेक कानून बने, उनकी शिक्षा की व्यवस्था की गई और धीरे-धीर उनके राजनीतिक अधिकारों को भी स्वीकार किया गया। जनता के हित के लिए कई कानून पास हुए पुराने कानूनों में सुधार लाया गया, जिससे जनता का जीवन-स्तर बदल गया।

इन परिणामों से सिद्ध हो जाता है कि औद्योगिक ने इंग्लैंड के जीवन स्तर को बदल दिया। क्रांति का परिणाम विश्वव्यापी था। इसके द्वारा इतिहास की धारा बदल गई। कृषि प्रधान देश औद्योगिक देश बन गया। वस्तु, औद्योगिक क्रांति इंगलैंड के लिए वरदान सिद्ध हुई। इस क्रांति द्वारा इंगलैंड संसार का प्रथम शक्तिशाली राष्ट्र बन सका।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)